हिंदी साहित्य और भारतीय किसान

डॉ. बबनराव बोडके

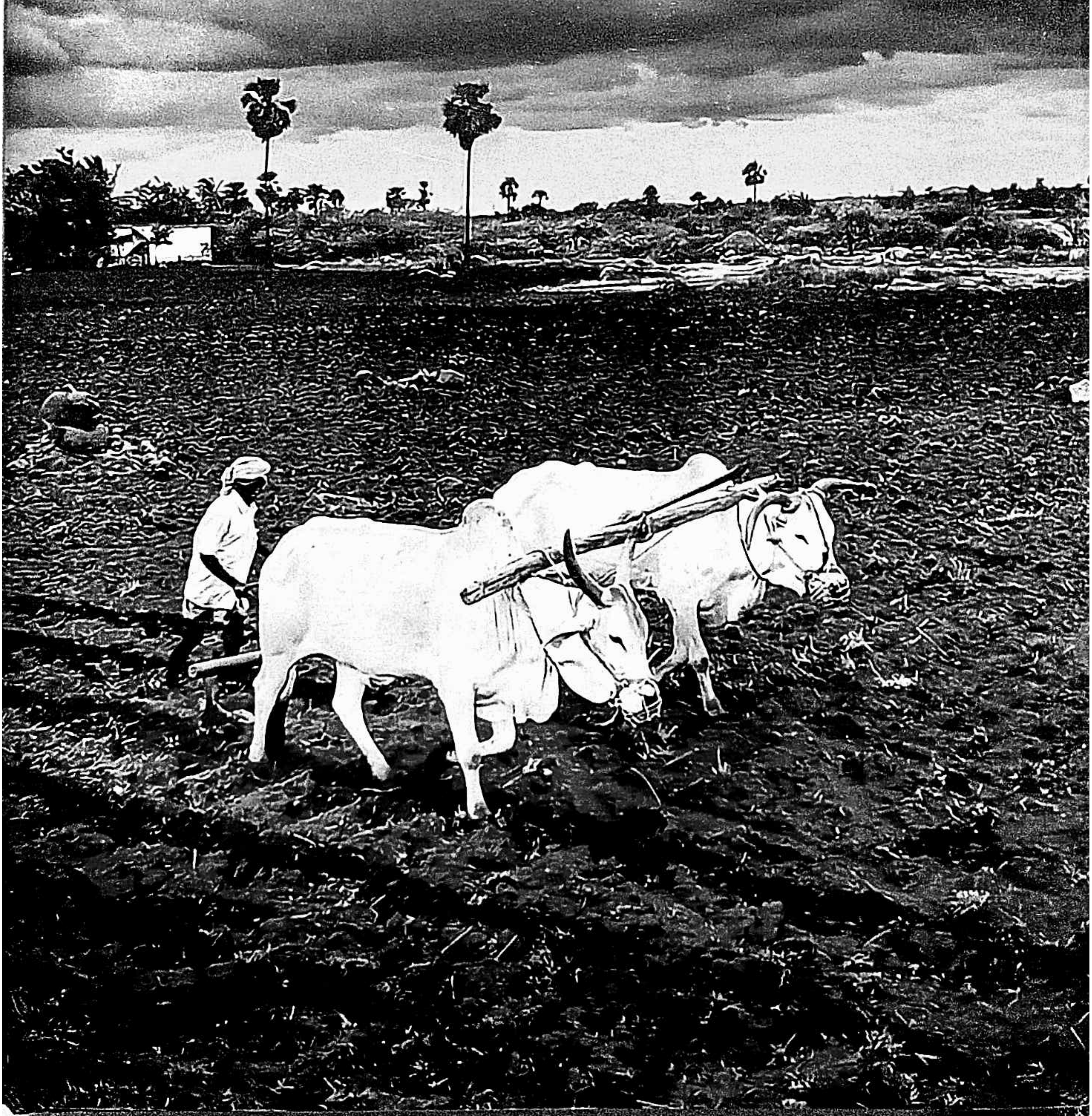

हिंदी साहित्य और भारतीय किसान

प्रो. (डॉ.) बबनराव बोडके

Vanya

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर

कानपुर – 208021 (उ.प्र.)

अस्वीकरण

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर द्वारा प्रकाशित लेखों/शोध पत्रों में व्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के अपने हैं। ये आवश्यक रूप से संपादक/प्रकाशक के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। संपादक/प्रकाशक इन लेखों/शोध पत्रों की सामग्री/पाठ से उत्पन्न किसी भी दायित्व के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं।

ISBN 978-93-90052-63-9
मूल्य : आठ सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	हिंदी साहित्य और भारतीय किसान
संपादक	:	प्रो. (डॉ.) बबनराव बोडके
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 1A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर – 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	2024
मूल्य	:	850/-
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
आवरण	:	गौरव शुक्ल, कानपुर
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

दो शब्द...

'हिंदी साहित्य और किसान विमर्श' विषय पर आयोजित एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के सुअवसर पर विद्वजन, अध्यापक एवं शोध छात्रों ने अपने चिंतनशील प्रतिभा के माध्यम से जो सृजनशील शोधालेख पुस्तक प्रकाशन हेतु प्राप्त हुए हैं, उन आलेखों का पठण करने के बाद मेरे मानसपटल पर स्वतंत्रता पूर्व काल से लेकर आज तक भारतीय किसानों का चित्र छा गया। आद्य समाज सुधारक महामानव महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा मराठी में लिखित 'शेतकऱ्याचा आसूड' (१८८६) उसका आगे चलकर हिंदी में अनुवाद 'किसान का कोडा' पुस्तक की याद आयी उस पुस्तक में महात्मा ज्योतिबा फुले ने तत्कालिन भारतीय किसानों की अवस्था का अत्यंत दाहक और भयावह यथार्थ से रूबरू किया। उसी समय किसान की पशु से भी गई बीती अवस्था, उनकी आकाश को भी छूनेवाली समस्या को उन्होंने चित्रित किया है और उस समय अंग्रेज सरकार से किसानों की स्थिति सुधारने के लिए गुहार लगाई थी। उस परंपरा को आगे बढाने का कार्य हिंदी साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी ने किया है। प्राप्त आलेखों में से ज्यादातर आलेख प्रेमचंद के साहित्य को लेकर लिखे गए हैं। प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'गोदान' का नायक किसान 'होरी' वर्तमान स्थितियों में भी प्रासंगिक है।

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य की ओर दृष्टि डाले तो दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, मजदूर विमर्श, बाल विमर्श, किन्नर विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श आदि विभिन्न प्रकार के विमर्श पर चिंतन हो रहा है। साथ ही साथ हिंदी साहित्य के विविध विधाओं में विविध विमर्शों पर मंथन हो रहा है। विशेषतः राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों के माध्यम से गहन एवं चिंतनशील विमर्श हो रहा है। प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. हूबनाथ पांडेय जी ने अपने आलेख में किसानों के प्रति कहा है 'कभी किसानों को संस्कृति का शेषनाग कहा जाता था। हजारों बरस पहले पूरी दुनिया में कृषि की शुरुआत महिलाओं ने की। समस्त पर्व उत्सव त्यौहार कृषि से ही उपजे 'वसुदैव कुटुंबकम्' कृषि का सूत्र वाक्य था। आज भी किसान और किसानी इस सूक्त की अभिव्यक्ति है। लेकिन दुर्भाग्य की बात है जो किसान दिन रात जीतोड़ मेहनत कर दुनिया का पेट भरता है वही आज भूखा नंगा और बर्बरता का जीवन जी रहा है, जो समीक्षाजगत से भी उपेक्षित। इसलिए प्रस्तुत संगोष्ठी का विषय किसान विमर्श है।

अनुक्रम

1. जो नहीं हो सके पूर्ण काम — 09
मधु कांकरिया
2. कृषक मेघ यज्ञ — 24
हूबनाथ पांडेय
3. किसान जीवन का यथार्थ — 26
कमलेश सिंह नेगी
4. हिंदी उपन्यासों में व्यक्त कृषक जीवन — 31
प्रो. रणजीत जाधव
5. प्रेमचंद के कहानियों में किसानी जीवन — 37
काजू कुमारी साव
6. भारतीय किसान के त्रासद जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति 'गोदान' — 46
डॉ. शेषराव राठोड
7. आधुनिक हिंदी कविता : किसान संस्कृति का चित्रण — 52
डॉ. अरुण प्रसाद रजक
8. बाजार आबाद और किसान बर्बाद की दास्तान 'ढलती साँझ का सूरज' — 59
डॉ. मनोहर भंडारे
9. कवि नांदेडी की कविताओं में किसान विमर्श — 63
प्रो. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
10. किसान और किसानी व्यवस्था की व्यथा — 68
डॉ. विश्वनाथ किशन भालेराव
11. बीसवी सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों में किसान विमर्श — 73
डॉ. जाधव ज्ञानेश्वर भाउसाहेब
12. समकालीन साहित्य में किसान विमर्श — 79
डॉ. दिपक विनायक पवार
13. किसान विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिंदी कविता — 85
डॉ. अमर आनंद आलदे
14. नागार्जुन की कविता में किसान विमर्श — 91
डॉ. गंगाधर बालन्ना उषमवार
15. प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित किसान संघर्ष — 96
डॉ. रूपाली दळवी–ओहोळ
16. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में किसान जीवन का यथार्थ — 99
डॉ. साईनाथ तुकाराम सगाटे
17. भारतीय किसानों / मजदूरों के प्रतिबद्ध लेखक : फणीश्वरनाथ रेणु (श्रेष्ठ गद्य के संदर्भ में) — 103
डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे
18. किसान जीवन के कुशल चितेरे जनकवि 'नागार्जुन' — 109
प्रो. संजय संपतराव जाधव
19. हिंदी कविता में किसान का चित्रण — 120
डॉ. न.पु. काळे
20. आधुनिक हिंदी कविता और किसान विमर्श — 126
डॉ. दिलीप गुंजरगे
21. किसान विमर्श के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी कविता — 130
प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
22. 'गोदान' : कृषक पीड़ा का दस्तावेज़ — 138
डॉ. कल्याण पाटील
23. प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में किसान विमर्श — 144
प्रा. डॉ. शेख आर. वाय.
24. केदारनाथ अग्रवाल की कविता — 150
शोधार्थी– गुलाबराव शामराव सोनोने
25. 'हत्या' कहानी में किसान जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ति — 155
डॉ. पुरमाजी माणिकराव मुमरे
26. प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त किसान जीवन — 161
प्रो. संगीता श. उप्पे
27. 'हत्या' कहानी में 'किसान की आत्महत्या नहीं, हत्या!' — 168
डॉ. सुनील गुलाबसिंग जाधव
28. कृषक कवि : केदारनाथ अग्रवाल — 173
डॉ. महावीर सुरेशचंद उदगीरकर
29. 'फाँस' उपन्यास में किसानी वेदना — 177
प्रो. बबन रंगाजीराव बोडके
30. प्रेमचन्द की कहानी और किसान विमर्श — 181
डॉ. संगीता पांडुरंग लोमटे
31. भारतीय किसान की दशा और दिशाएँ — 184
डॉ. बनिता बाबुराव कुलकर्णी
32. प्रेमचन्द का गोदान और भारतीय किसान — 190
प्रो. किशोर बळीराम लोहकरे

9

कवि नांदेडी की कविताओं में किसान विमर्श

प्रो. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

सारे विश्व में किसान एक ऐसा समाज है, जो सबसे ज्यादा मेहनत करता है। आज के इस घोर ग्लोबल युग में किसान की हालत बद से बदतर होती जा रही है। किसान हमेशा उपेक्षितों की श्रेणी में रहा है। अब उसकी उपेक्षा धीरे–धीरे विधाओ, चर्चाओं से गायब हो रही है। कृषि के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है।

हिंदी के आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि 1857 का किसान विद्रोह ही है, जिसमें किसानों ने खूब बढ़चढ़कर भाग लिया था। आधुनिक इतिहास साम्राज्यवाद के लुट के विरूध्द किसानों के विद्रोह से भरा पड़ा है। यद्यपि तत्कालीन साहित्य में किसान–विद्रोह की अभिव्यक्ति नही मिलती, लेकिन बाद के साहित्य पर तथा सामाजिक, राजनीतिक आंदोलनों पर इसका गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। आधुनिक काल में मशीनीकरण व औद्योगिकरण समाज में तब्दीली के साथ समाज में नए वर्गों उदय भी हुआ और वर्ग–संतुलन भी बदला है, प्राथमिकताएँ भी बदली है। समाज के मेहनतकश वर्गों के सुख–दुख व जीवन संघर्ष ने हिंदी साहित्य में केंद्रीय स्थान ग्रहण किया है। आधुनिक समाज ने कई विधाओं को पैदा किया, जिसने शोषित–वंचित वर्ग की आशाओं–आकांक्षाओं को व्यक्त किया है।

किसान को लेकर जो कविताएँ लिखी हुई, वे कभी विमर्श का हिस्सा नही बनी। हिंदी के कुछ प्रकाशनों ने मुख्य कवियों की कविताओं को लेकर 'प्रतिनिधी' रूप में पाठकों तक पहुँचाने का कार्य किया है। लेकिन जिन कवियों ने किसानों को अपनी कविताओं का विषय बनाया, वे कविताएँ संकलनकर्ताओं ने काट दी है। किसानों की समस्याओं के लेकर जो कविताएँ लिखी गयी वे ज्यादातर फुटकर ही देखने को मिलती है। ऐसी ही कविताएँ करनेवाले कवि 'नांदेडी' की कविताओं में किसानों के किस्से, उनकी समस्याएँ हमे देखने को मिलती है।

कवि नांदेडी का कविता संग्रह 'कोरोना तथा अन्य कविताएँ' सन 2021 में पूजा पब्लिकेशन, कानपूर से प्रकाशित हुआ है। कवि डॉ.नामदेव उतकर 'नांदेडी' का यह नौवा कविता संग्रह है। इसमें लगभग साठ लघु–गुरू कविताएँ हैं। प्रस्तुत आलेख का आधार 'कोरोना तथा अन्य कविताएँ' है। हैद्राबाद निवासी प्रा. राजेंद्रकुमार वानखेडे लिखते है, ''कवि नांदेडी हिंदी और भारतीय संस्कृति को

उन्होंने अपने अंदाजसे लगभग 40 पुस्तकों में बाँधने का प्रयत्न किया है, यह इस काल का अपने आप एक दुर्लभ उदाहरण है।"[1]

साहित्यकार डॉ.नामदेव ठाकुर नांदेडी की साहित्य सृजन 'रचना' के प्रति वह मानता है –

"यदि है प्रतिभा विवेक प्रज्ञा सबलं
अनुभव प्रेरक प्रसंग समस्या प्रबल
चिंतन-मनन से हो जाता मन चंचल
शब्द बीज हृदय भू अंकुराते सजल
विचारभाव कल्पना खाद से आती फसल।"[2]

भारत कृषिप्रधान देश है, यहाँ का कृषक–समाज का रक्षक है। वह धरनी से मानव– मात्र ही नहीं प्राणी मात्र के लिए भी क्या नही उगाता है। इसलिए वह अपनी कविता 'धरनी' में कहता है–

"कितनी बार कितने हल चले
कितनी बार कितनी फसलें उगी
किस किसने लाभ उठाया
फिर भी ज्यों–की–त्यौं,
धन्य ! तेरी अद्भुत माया
धन्य ! तेरी फलदायी काया
कौन–कौन गुण गाया
और किसने कितना सुख पाया !"[3]

ऐसी मेहनत करनेवाले कुर्मी किसान को कौन भुल सकता है इसलिए कवि किसान को कहता है–

"अपने लिए तो हर कोईल जी लेता है 'नान्देडी'
तउम्र जिया दूसरों के लिए उसे कैसे भूलूंगा मै।"[4]

किसान समाज का अन्नदाता होता है, वह समाज के लिए आठों पहर खेती मे खपता है। समाज को मौसमी सुफल, सब्जी, अनाज देना चाहता है–जिससे उसका स्वास्थ्य ठीक बना रहे। यथा–

"नैसर्गिक–नैसर्गिक
कृत्रिम–कृत्रिम होता है
मौसमी फल की और ही मिठास
मूल–मूल
छायाकिंत–छायाकिंत होता है
यहाँ हो वहाँ किसी कोने में जहाँ।"[5]

देश के भोले–भाले किसानों को व्यापारी धनवानों द्वारा शोषण किया जाता

है, तो कभी–कभार उसके बहु–बेटी की इज्जत लूटी जाती है। तब उसे रास्ते पर उतरकर संघर्ष करना पड़ता है। जैसे–'बलात्कार' कविता में कवि कह उठता है–

"तब
'धार' के मैना पर जब बलात्कार हुआ
विरोध करने से बिरसा मुंडा मारा गया,
अब
किसी भी मैना पर बलात्कार हो रहा है
देश का कानून ठंडा पड़ रहा है।"[6]

राष्ट्र के कानून पर उंगली उठानेवाला यह मेहनत कश जीवन संगठीत होकर शासन से लोहा लेना चाहता है पर कैदखाने में बंद होना उसे मंजूर नही है। कवि प्रश्न करता है–

"भीन कांच की दीवारों बंदिस्त
उडते पंछी पिंजड़े में बंदिस्त
मृगादि छलांगी जानवर बंदिस्त
गज गेंडादि अल्प जल में बंदिस्त
जहरीले नाग अजगर बंदिस्त
पशु प्रदर्शनी झू पार्क में बंदिस्त
इन्हें क्यों कौन करता है बंदिस्त ?
भगवान या मनुष्य ?
क्या उन्हें भी कोई करेगा बंदिस्त ?"[7]

किसान संघर्ष करते–करते थक जाता है, न्याय न मिलने या कर्ज अदा न कर पाने के कारण आत्महत्या कर बैठता है,

"जिंदगी संघर्ष का नाम
उठ–बैठ चलने का काम
उलझी सुलझत गांठ
अब फ़िक्र–ही–फिक्र
चार दिवस का हाट
बाग–बगीचा झर गया
स्नेह निर्झर बह गया
अब दिन गिनत भाट।"[8]

हमारा देश बहु–भाषिक धार्मिक है। जहाँ नाना जाति पाति के लोग हिल मिल जुलकर रहते है। वे अपनी–अपनी रूढि परंपरा से 'जीयो और जीने दो' के साथ जीवन बीताते है। उनके व्यवहार के कारण राष्ट्रीय अखंडता, राष्ट्रीय एकात्मता गोचर होती है। प्रायः भारतीय किसान धार्मिक है, वह नैतिकता से

चलता है। उसे ईश्वर पर विश्वास है, क्योंकि 'लंकेश' कविता में रचयिता का मंतव्य है–

"किसी के कर में है हमारे बाल
वह कब झटका देगा विदित नहीं
उसके सामने किसी की न चलती
मै–मै कहनेवाला लंकेश भी
क्या सोने की लंका ले गया ?"[9]

इस बदलती दुनिया को देख ईमानदार किसान के मन में नाना प्रकार के प्रश्न उठ खड़े होते है और वह सोंचते ही सोचता रह जाता है। कवि 'नांदेडी' का भी यही 'दूर्वानुमान' है कि,

"कितनी बदलती जाएगी दुनिया
आटोमेटिक होती जाएगी दुनिया
जी चाहै।तान पैदा करेगी दुनिया
स्वास्थ्य संभालेगी घड़ी दुनिया
बिना जल फसल उगाएगी दुनिया
क्या निगरानी करेगी रोबोटी दुनिया ?"[10]

आज का युग विज्ञान–तंत्रज्ञान का युग है। मनुष्य विज्ञान में इतनी प्रगति कर ली है कि, आज वह कृषि पर तंत्रज्ञान का उपयोग करने लगा है। जिसके पास पारंपारिक खेती है उसका मूनाफा कम होता है और जिसके पास पैसा अधिक है वह इन महंगे यंत्रो का उपयोग कर फसल अच्छी उगाता है। मनुष्य द्वारा किए गए विज्ञान की इस प्रगति से बहुत कुछ होने लगा है और उसे देख उपरवाला क्या सोंचता होगा यह 'ब्रम्हमाण्ड नापता इंसान' इस कविता में कवि ने किस तरह शब्द किया है देखिए ? –

'इंसान के कदम ब्रम्हमांड नापने लगे
सौ मंडल बाह्य दुनिया समझने लगे
स्वीकार विज्ञान–अज्ञान डुबाने लगे
टेस्ट टयुब बेबी, उत्कर्ष मानने लगे
क्या देवता ये देख आचंबित होने लगे ?।"[10]

संसार में भारत का गौरव होना अर्थात भारतवासियों का गौरव है। भारतीयता का गौरव किसान के कारण है। मातृभूमि पर शहीद होने वाले सिपाही की तरह किसान भी अपनी मातृभूमि यानी अपनी खेती से लगाव रखता उससे प्रेम करता है। उसकी सेवा कर अपने को गौरवान्वित महसूस करता है। प्राकृतिक आपत्तियां का डटकर सामना करता है। उसके पास अपने–पराए का भेद नही होता। किसान प्रकृति के जवान साथ होते है। इसीलिए सरदार पुर्णसिंह अपने

निबंध 'मजदूरी और प्रेम' मे कहते है– "जब मुझे किसी फकीर के दर्शन होते है तब मुझे मालूम होता है कि नंगे सिर, नंगे पाँव एक टोपी सिर पर, एक लंगोटी कमर में, एक काली कमली कन्धे पर, एक लम्बी लाठी हाथ में लिए हुए गौओं का मित्र, बैलों का हमजोली, पक्षियों का महाराज, महाराजाओं का अन्नदाता, बादशाहों को ताज पहनाने और सिंहासन पर बिठानेवाला, भूखो और नंगे को पालनेवाला, समाज के पुष्पोद्यान का माली और खेतों का वाली जा रहा है।"[12]

सच में किसान हमारी देश की धरोहर हर एक आज वह भूखा और नंगा हो गया है। हमारा अन्नदाता आज गले में फाँसी का फंदा लगाने को मजबूर है। समाज के पुष्पोद्यान का माली आए अपने ही पुष्पोद्यान में अपने को समाप्त कर रहा है। चाहें सरकारे कितनी भी आए उसकी ओर कोई ध्यान नही देता। उलटा उसका शोषण किया जाता है। उसकी खेती कार्पोरेट के हवाले कर दी जाती है। उसे उसकी जमीन से बेदखल किया जा रहा है। ऐसे में वो न्याय किससे मांगे। न्याय देनेवाले ही उसपर अन्याय कर रहे हैं।

संदर्भ

1. कोरोना तथा अन्य कविताएँ–डॉ.नामदेव उतकर–नांदेडी–प्रा.राजेंद्रकुमार वानखेडे की भूमिका से–पृ.4.
2. डॉ.नामदेव उतकर नांदेडी–कोरोना तथा अन्य कविताएँ–पृ.49.
3. वही – वही – पृ.31
4. वही – वही – पृ.38
5. वही – वही – पृ.58
6. वही – वही – पृ.56
7. वही – वही – पृ.62
8. वही – वही – पृ.45
9. वही – वही – पृ.59
10. वही – वही – पृ.63
11. वही – वही – पृ.63
12. मजदूरी और प्रेम – सरदार पूर्ण सिंह पृ.17.

हिंदी विभाग प्रमुख
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर, नांदेड–431802.